



राम भक्ति परम्परा और साहित्य

सुनीता देवी

एम.ए. हिन्दी

शासकीय महिला कॉलेज

भोडियाखेडा, फतेहाबाद (कुक)

हरियाणा, भारत

शोध संक्षेप

भक्ति परम्परा का विकास प्राचीनकाल में ही हो गया था। राम भक्ति शाखा के कवियों ने अपनी मधुर वाणी से जनता के तमाम स्तरों को राममय कर दिया। राम भक्त कवियों ने सभी धर्मों में समन्वय स्थापित किया। प्रस्तुत शोध पत्र में राम भक्ति भावना और साहित्य पर चर्चा की गई है।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार भागों में बाँटा गया है। आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल व आधुनिक काल। आचार्य शुक्ल ने भक्तिकाल को पुनः दो वर्गों में बाँटा है - निर्गुण व सगुण भक्ति। सगुण भक्ति को पुनः दो उपवर्गों में बाँटा गया है - रामकाव्य व कृष्णकाव्य। हिन्दी साहित्य में भक्ति काल का समय 1375 ई. से 1700 ई. तक माना जाता है। यह हिन्दी साहित्य का श्रेष्ठ युग है। आचार्य श्यामसुन्दर दास ने इसे स्वर्ण काल कहा है। दक्षिण में आलवार बन्धु नाम से कई प्रख्यात भक्त हुए हैं। आचार्यों में रामानुजाचार्य प्रमुख थे। इन्हीं की परम्परा में रामानन्द हुए। आपका व्यक्तित्व असाधारण था। उन्होंने भक्ति के क्षेत्र में ऊँच-नीच का भेद तोड़ दिया। सभी जातियों के अधिकारी व्यक्तियों को आपने शिष्य बनाया। रामानन्द ने विष्णु के अवतार राम की उपासना पर बल दिया। उनके राम परब्रह्म स्वरूप हैं। उनमें शील, शक्ति और सौन्दर्य का समन्वय है।

वे मर्यादा पुरुषोत्तम और लोकरक्षक हैं। राम भक्ति पर प्रकाश डालने से पहले भक्ति क्या है ? भक्ति का स्वरूप क्या है ? इसे समझ लेना चाहिए।

भक्ति से आशय

मध्यकालीन भक्त आचार्यों ने अपनी-अपनी सैद्धान्तिक मान्यताओं के अनुकूल विष्णु के किसी अवतार विशेष के प्रति अनन्य निष्ठा प्रकट करते हुए अन्य अवतारों के प्रति अपेक्षित श्रद्धा व्यक्त की है। चौदहवीं सदी के मध्य से सत्रहवीं सदी के मध्य भक्ति काव्य व्यापक चेतना के साथ एक विराट आंदोलन के रूप में दिखाई पड़ता है। 'भक्ति' शब्द की उत्पत्ति 'भज' धातु से हुई है। भक्ति शब्द का अर्थ है - भजना। प्राचीन काल से ही भारतीय साधना के क्षेत्र में ज्ञान, कर्म और भक्ति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। 'भक्ति' को अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया गया है :

1. 'श्री मद्भागवत' में 'निष्काम भाव' को ही भक्ति का रूप स्वीकार किया है।

2. 'शाण्डिलय भक्ति सूत्र' में - ईश्वर में परम अनुरक्ति का नाम ही भक्ति है।

3. नारद मुनि के शब्दों में:- "सा त्वस्मिन् परम् प्रेमरूपा अमृतस्वरूपा च।"

इस प्रकार भक्ति भावना ईश्वर के प्रति अनुरक्ति, उसकी स्मृति, निष्काम भाव, श्रद्धा के गुणों से युक्त भावना है जिसमें भक्त अपने आराध्यके आवेगमय प्रेम एवं श्रद्धा भाव रखते हुए उसकी समीपता चाहता है। भक्ति के संबंध में एक पंक्ति :

'भक्ति द्रविड़ उपजी लाए रामानंद'।

भक्ति का स्वरूप

रामभक्त कवियों के काव्य में सेवक-सेव्य भाव है। वे दास्य भाव से राम की आराधना करते हैं। वे स्वयं को क्षुद्रातिक्षुद्र तथा भगवान को महान बतलाते हैं। राम काव्य में ज्ञान, कर्म और भक्ति की पृथक-पृथक महत्ता स्पष्ट करते हुए भक्ति को उत्कृष्ट बताया गया है। यद्यपि वे ज्ञान मार्ग को कठिन तथा भक्ति मार्ग को सहज, सरल स्वीकार करते हैं। रामानंद ने विष्णु के अन्य रूपों में 'रामरूप' को ही लोक के लिए अधिक कल्याणकारी समझ छांट लिया और एक सबल सम्प्रदाय का संगठन किया। इसके साथ-साथ ही उन्होंने उदारतापूर्वक मनुष्य मात्र को इस सुलभ सगुण भक्ति का अधिकारी माना और वर्णभेद, जातिभेद, देशभेद आदि का विचार भक्ति मार्ग से दूर रखा। इसी प्रकार राम साहित्य प्रचुर मात्रा में लिखा गया। राम साहित्य का विवरण देने से पहले साहित्य को जान लेना आवश्यक है। साहित्य शब्द को परिभाषित करना कठिन है जैसे पानी की आकृति नहीं होती जिस सांचे में ढालो वह ढल जाता है, उसी तरह का तरल है यह शब्द। कविता, कहानी, नाटक, निबंध, रिपोर्ताज, जीवनी, रेखाचित्र, यात्रा वृत्तान्त,

समालोचना बहुत से सांचे हैं। संस्कृत में एक शब्द वाङ्मय। भाषा के माध्यम से जो कुछ भी कहा गया, वह वाङ्मय है। साहित्य के संदर्भ में संस्कृत की इस परिभाषा में मर्म है - शब्दार्थो सहितो काव्यम। आचार्य विश्वनाथ ने 'साहित्यदर्पण' नामक ग्रन्थ लिखकर साहित्य शब्द को व्यवहार में प्रचलित किया। भाव किसी सृजन को वह गहराई प्रदान करते हैं जो किसी रचना को साहित्य की परिधि में लाता है। कितनी सादगी से निदा फाजली कह जाते हैं-

'मैं रोया परदेस में भीगा मां का प्यार

दुख ने दुख से बात की, बिन चिढ़ी बिन तार'।

शब्द और अर्थ के बीच सादगी की स्पर्धा है किन्तु भाव इतने गहरे कि रोम-रोम से इस सृजन को महसूस किया जा सकता है, यही साहित्य है। 'साहित्य समाज का दर्पण है।' रचनाकार अपने सामाजिक सरोकारों से विमुक्त नहीं हो सकता, यही कारण है कि साहित्य अपने समय का इतिहास बनता चला जाता है। साहित्य शब्द, अर्थ और भावनाओं की वह त्रिवेणी है, जो जनहित की धारा के साथ, उच्चादर्शों की दिशा में प्रवाहित है। किसी भाषा के वाचिक और लिखित समूह को साहित्य कह सकते हैं। दुनिया में सबसे पुराना वाचिक साहित्य हमें आदिवासी भाषाओं में मिलता है। "सहितस्य भावः ततसाहित्यम्" जिसमें सहित का भाव हो, उसे साहित्य कहते हैं। इसके विषय में संस्कृत साहित्यकारों ने जो सम्मतियां दी हैं, वे श्राद्ध विवेककार कहते हैं :

"परस्पर सापेक्षाणा तुल्य रूपाणां युगपदेक क्रिया-न्ययित्वं साहित्यम्।"

रामभक्ति परम्परा :

वैदिक और लौकिक संस्कृत में रामकथा-वाल्मीकि रामायण, महाभारत और भागवत पुराण मध्ययुगीन भारतीय संस्कृति, धर्म और

साहित्य के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। धर्म कथाओं में रामकथा का अपना विशेष महत्व है। रामकथा का सर्वप्रथम बृहत् काव्यगुण सम्पन्न, सुगठित और क्रमबद्ध रूप वाल्मीकि रामायण में मिलता है। वाल्मीकि राम कथा के प्रवर्तक थे। वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ दाक्षिणात्य, गौड़ीय और पश्चिमोत्तरीय उपलब्ध है। रामकथा की दृष्टि से वाल्मीकि रामायण ही प्राचीनतम ग्रन्थ माना जाता है। जिस काव्य की रचना करने में महर्षि च्यवन असमर्थ रहे, वाल्मीकि ने उसे काव्य के रूप में प्रस्तुत किया। इसमें राम को एक मानव के रूप में अंकित किया गया है। वैदिक साहित्य में रामकाव्य का समग्र रूप क्रमशः चाहे न मिले पर उसके समस्त चारित्रिक बीज सूत्र अवश्य प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल में राम, दशरथ, सीता, जनक, इक्ष्वाकु आदि नाम मिलते हैं। इसके अतिरिक्त ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण आदि साहित्य में भी राम, दशरथ, सीता का उल्लेख हुआ है।

महाभारत और पुराणों में राम कथा महाभारत में द्रोण पर्व, शान्ति पर्व और आरण्यक पर्व में चार स्थलों पर राम कथा का वर्णन मिलता है। हरिवंश, वायु, विष्णु, भागवत, कूर्म, अग्नि, नारद, गरुड, स्कन्द, ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्माण्ड आदि पुराणों में राम कथा का उल्लेख पाया जाता है।

संहिताओं में रामकाव्य प्राचीन वैष्णव संहिताओं और उपनिषदों में भी रामचरित का उल्लेख मिलता है। अगस्त्य संहिता, कलि राघव और राघवीय संहिता में राम के प्रति दास्य भाव की भक्ति का वर्णन किया गया है। अन्य अनेक संहिता ग्रंथों में राम के मधुर रूप की उपासना का वर्णन हुआ है। बौद्ध और जैन कवियों द्वारा रामकाव्य

चार सौ ई. पूर्व के लगभग रामकथा अत्यधिक लोकप्रिय हो चुकी थी। बौद्ध धर्म में बोधिसत्व को राम का अवतार माना गया है। जातक साहित्य में राम कथा आज भी सुरक्षित है। जैन साहित्य में राम कथा का विपुल प्रयोग हुआ है। जैन राम कथा की दो परम्पराएं हैं- विमलसूरि के 'पउमचरिय' की कथा वाल्मीकि रामायण की कथा के बहुत निकट है। जैन कवियों ने राम के अनेक विवाहों का वर्णन किया है।

संस्कृत नाटकों में रामकथा रामकथा को आधार बनाकर संस्कृत में काफी संख्या में नाटक लिखे गए हैं। भास द्वारा रचित 'प्रतिमा' और 'अभिषेक नाटक' भवभूति रचित 'महावीर चरितम्' और 'उत्तर रामचरितम्' मुरारी रचित 'अनंगराघव' रामेश्वर की 'बालरामायण' तथा 'हनुमन्नाटक' आश्चर्य चूडामणि रचित 'प्रसन्नराघव' आदि नाटकों में रामकथा को कथानक बनाया गया है। रामचरित विषयक काव्य ग्रन्थों में निम्न तो अत्यन्त प्रसिद्ध है। रघुवंश नामक महाकाव्य में नवम् सर्ग से षोडश सर्ग तक रामकथा का वर्णन किया है। कुमार दास रचित 'जानकीहरण' क्षेमेन्द्र रचित 'रामायण मंजरी' और 'दशावतार चरित' महाकाव्यों में राम कथा का ही वर्णन किया गया है।

हिन्दी साहित्य में राम कथा हिन्दी में राम काव्य का विवेचन तुलसीदास को ही मध्य में रखकर किया जा सकता है। तुलसी पूर्व हिन्दी में राम कथा का साहित्य अधिक विस्तृत नहीं है। अतः तुलसीदास के रामचरितमानस की तुलना किसी अन्य से करना निरर्थक होगा। हिन्दी में सबसे पहले चन्दबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' नामक महाकाव्य के द्वितीय समय में रामकथा का वर्णन है। इस समय में दशावतारों का वर्णन किया गया है। कवि ने जहां

एक ओर रामावतार का वर्णन वाल्मीकि रामायण के अनुसार किया है, वहीं दूसरी ओर युद्ध कांड की कथा बड़े विस्तार से की है। राम काव्य परम्परा की प्रथम रचना गोस्वामी विष्णुदास रचित भाषा वाल्मीकि रामायण उपलब्ध होती है लेकिन कवि ने संपूर्ण में विभक्त किया है। इन्होंने प्रत्येक कांड को सर्गों में विभक्त किया है। ईश्वर दिल्ली के बादशाह सिकंदर शाह के समकालीन थे। रामकथा से संबंधित उनकी रचनाएं 'भरत-विलाप' अंगदपैज और राम जन्म भी सत्यवती कथा के आसपास रची गई। भरत विलाप में राम वनवास के पश्चात भरत के ननिहाल से लौटनेख् दशरथ की अन्त्येष्टि, राम को लौटाने के लिए भरत की चित्रकूट यात्रा तथा चरणापादुका लेकर अयोध्या आने तक की कथा का वर्णन किया है। सूरदास ने सूरसागर में रामकथा से संबंधित कुछ पदों की रचना की सूरसागर के नवें स्कन्ध में राम जन्म से लेकर राज्याभिषेक तक की कथा का वर्णन और आत्म-निवेदन किया गया है। हनुमान जी का सीता को लाने व रावण को पकड़ लाने या लंका को उठा लाने की बात राम से कहना, रावण मंदोदरी संवाद, अंगद के दूतत्व की उद्गावना की है। सूर के रामचरित-वर्णन का आधार उनकी राम-कृष्ण की अभेदोपासना है। यशोदा कृष्ण को राम की कहानी सुनाती है: दशरथ के पुत्र राम थे। उनकी रानी सीता थी। अपने पिता के वचन मानकर वे पंचवटी वन में रहने लगे। वहां रहते हुए अभिमानी रावण ने सीता का हरण किया। यह सुनते ही 'लक्ष्मण धनुष दो' कहकर कृष्ण उठ बैठे। यशोदा भयभीत हो गई। अभेदो पासना का यह उत्कृष्ट उदाहरण है। इसी तरह मेहो जी कृत रामायण का रचना समय संवत् 1575 तक

हिन्दी मरू गुर्जर और राजस्थानी में तीन प्रकार की राम काव्य परम्पराएं प्रचलित थी :

1. वैष्णव रामकाव्य परम्परा (विष्णुदास, ईश्वरदास, सूरदास की रचनाएं)
2. जैन राम काव्य परम्परा (ब्रह्मजिनदास तथा अन्य कवि)
3. वैष्णव लोकधर्मी रामकाव्य परम्परा (कर्मण कृत सीताहरण)

मेहो जी कृत रामायण के कथा सार के अनुसार असुर संहारने, बंदी देवताओं को छुड़ाने और अपने वचन को सत्य सिद्ध करने हेतु परमेश्वर ने राम लक्ष्मण के रूप में अवतार लिया। वे तथा भरत-शत्रुघ्न चारों अयोध्या के राजा दशरथ के घर जन्मे।

'अठसठ तीरथ जो पुन न्हाया, सुगौ रामायण काने,

पढियां नै मेहो समझावै, धायो धरम धियाने।

यदि सीता का हरण नहीं होता, तो उनका 'सत्' लक्ष्मण का 'जत' और हनुमान का बल पराक्रम में सब गुण प्रकट नहीं होते। (कूप-छांह की भांति भीतर ही समाप्त हो जाते)

तुलसीदास रामकाव्य के एकछत्र सम्राट है। रामकाव्य परम्परा का यह देदीप्यमान रत्न है। तुलसीदास ने कवितावली में कहा है कि :

'माता पिता जग जाइ तज्यो विधिहू न लिख्यो कछु भले भलाई।'

गोस्वामी जी का जब जन्म हुआ वे तब पांच वर्ष के बालक के समान थे और उन्हें पूरे दांत भी थे वे रोये नहीं, केवल 'राम' शब्द उनके मुंह से सुनाई पड़ा। तुलसीदास की कीर्ति का आधार स्तम्भ उनका महान ग्रन्थ रामचरितमानस है। इसमें कवि ने मानस रूपी सरोवर के रूपक द्वारा रामकथा को प्रस्तुत किया है। तुलसी की लोकप्रियता का कारण यह है कि उन्होंने अपने

काव्य में भोगे गए जीवन का गम्भीर तथा व्यापक चित्रण किया है। तुलसी ने राम के संघर्ष की कथा को अपने समाज तथा अपने जीवन संघर्ष की कथा के अनुसार देखा। उन्होंने न तो वाल्मीकि के राम का वर्णन किया तथा न ही भवभूति के राम का बल्कि उन्होंने अपने युग के राम का भावपूर्ण वर्णन किया। रामकाव्य की परम्परा में संस्कृत में जो स्थान वाल्मीकि का है, वहीं हिन्दी में गोस्वामी तुलसीदास का है।

‘गोरख जगायो जोग भगति भगायो लोग’।

इसी प्रकार अग्रदास तुलसीदास के समकालीन थे। वे दिन रात अपने आराध्य श्री राम के ध्यान में लीन रहते थे। इन्होंने रामध्यानमंजरी और हितोपदेश उपखाणा बावनी राम कथा से संबंधित लिखी। यह अग्रअली नाम से स्वयं को जानकी की सखी मानकर काव्य रचना करते थे। इन्होंने राम के ऐश्वर्य रूप और उनकी लीलाओं का सुंदर वर्णन किया है। प्राणचंद चौहान ने संवत् 1667 में ‘रामायण महानाटक’ लिखा और हृदयरमा के हनुमन् नटक की चर्चा की जा सकती है।

‘जानकी को मुख बिलोक्यो ताते कुंडल,
न जानते हौं, वीर पायं छुवै रघुराई के।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में रामकाव्य

आधुनिक युग के रामकाव्यों में रामचरित उपाध्याय की ‘रामचरित चिंतामणि’ रामनाथ ज्योतिषी का ‘श्री राम चन्द्रोदय’, मैथिलीशरण गुप्त का ‘साकेत’ अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध का ‘वैदेही वनवास’, बालकृष्ण शर्मा नवीन का ‘उर्मिला’ आदि कुछ काव्य रचनाएं हैं जिनमें आधुनिक युग के अनुसार नवीन विचारों का समावेश किया है। निराला द्वारा रचित ‘राम की शक्ति पूजा’ मायादेवी द्वारा रचित ‘शबरी’ नरेश मेहता कृत ‘संशय की एक रात’ राम कथा पर आधारित रचनाएं हैं।

निष्कर्ष

तुलसीदास जी ने अपने काव्य में रामकथा के माध्यम से जो आदर्श स्थापित किया है उसके पीछे लोक कल्याण की भावना विद्यमान है। अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति को अनेक प्रसंगों, घटनाओं के माध्यम से वर्णित किया है। यदि सच्चे अर्थों में कोई व्यक्ति भारतीय संस्कृति से परिचित होना चाहता है तो उसे तुलसीदास द्वारा रचित रामकाव्य से बढ़कर दूसरा साधन न मिलेगा।

“जब जब होइ धरम की हानि
बढ़हि असुर अधम अभिमानी
तब तब धरि प्रभु मनुज सरीरा
हरहिं सकल सज्जन भव पीरा।”

संदर्भ ग्रन्थ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - डा. रामचन्द्र शुक्ल
2. मेहो जी कृत रामायण - डा. हीरा लाल माहेश्वरी
3. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास
- 5 www.sahityashilpi.com/2008/09/blogspo3518.htm
- 6 <https://hi.wikipedia.org/wiki>
- 7 Gadyakosh.org/gk